!! गीता भगवान के अनमोल वचन!!

❖ गुरू में भगवान का विश्वास आना कठिन से कठिन है। अन्त तक मन गुरू के ही विकार दिखायेगा। दूसरे सबके गुण पर गुरू के विकार दिखायेगा क्योंकि अहंकार गवाने वाला तो गुरू ही है।

❖ मन को पता है कि मैं सीख गया हूँ तो उल्टा अधिक अहंकार आयेगा तो गालियाँ भी अधिक खायेगा। फिर मन आता रहेगा कि मुझे गुरू व्यर्थ क्यों कह रहा है। मैं तो राइट हूँ मुझे भक्तों के आगे और दूसरे नए जिज्ञासुओं के आगेक्यों बेइज्जत किया।

❖ सब कुछ त्याग करना सरल है केवल मान इज्जत प्रसंशा की इच्छा छोड़ना बड़ा कठिन है।

❖ अन्त में मन चाहेगा कि मैं कुछ हूँ गुरू मुझे कर्ता क्यों समझता है? मुझे इच्छा वाला क्यों समझता है । खुद है तो मैं भी हूँ। पर मैं अपनी हस्ती गंवा दूँ कि मैं हूँ ही नहीं। किसे कहता है, किसे लगा? कितनी भी

गोलियाँ लगाये पर मुझे असर नहीं करती।

- जब तक गुरू से Free नहीं होगें तब तक द्वैत में रहेंगे हमेशा।
- इष्क वाला अन्धा होता है, गुरू के विकार नहीं देखेगा और गुरू को कभी भी छोड़ नहीं सकेगा पर दूसरा है regard वाला, गुरू समझ कर और अपने को शिष्य समझकर बैठ कर ज्ञान सुना तो उम्र भर डर में रहेगा, मन को मारता रहेगा जबरदस्ती। बड़ी तकलीफ होगी। पर मैं ना समझकर गुरू के ज्ञान की कदर करेगा तो चढ़ता जायेगा। मुझे किसने इस मन्जिल पर पहुचाया, उसकी महानता, कदर, महिमां जानेगा (जानता आयेगा) तो हमेशा नम्रता प्रेम में रहेगा। नहीं तो अन्दर में डरता रहेगा और बाहर से regard में चलेगा।
- सच्चाई से निंभयता आयेगी।
- हम शरीर में गुरू आत्मा में है तो कैसे उसे पहचान सकेंगे। अपने को जो शरीर समझेगा वह गुरू को पक्का शरीर समझेगा और उम्र भर उसके कर्मो और विकारों में जाता रहेगा। समझेगा, सच्चा होकर गुरू

को मन की बातें बतायें या तो मन को कुत्ता समझकर भौंकने दे, खुद कभी भी मन के कहने पर न लग और मन को Avoid करता आये तो मन कभी भी उसके ऊपर नहीं चढ़ेगा।

- हम मन को ध्यान नही दें। मैं मन का साक्षी हूँ, दृष्टा हूँ, मन के एक एक ख्याल को जानता हूँ, मन कभी भी राईट नहीं बतायेगा पर मैं आत्मां हूँ और ये सब भगवान हैं मन की दाल नहीं गलेगी। मन हार कर लौट जायेगा।
- गुरू को इतनी करूणां हो कि रह न सके प्यार में खींचने के सिवाय। गुरू को हर वक्त सबके लिये प्यार है चाहे सब गुरू को गालियाँ देते हैं तो भी वह सुनता नहीं है, वह तो देखता रहता है। नदी की तरह वर्षा की तरह बरसता रहता है।
- दूसरे को देख कर खुश हों कि भले कोई भी चढ़े ज्ञान में सब हमारे प्यारे हैं। हमें याद नहीं आना चाहिये कि मैने किसी को सिखाया है। वह मेरे से भी होशियार हो सकता है। वह पहले से ही भगवान

है तो सिखाया क्या?

- सूअर को किसी ने खड्डे से निकाला तो बोला कि मैंने अपने को शान्ति दी। मैंने किसी पर महरबानी नहीं की है।
- शक वाला दूर होता जायेगा शंका वाला पूछ कर नजदीक हो जायेगा कट-कट करता जायेगा।
- तुम शरीर ही नहीं हो, मैं शरीर ही नहीं हूं तो शंका शक काहे का? शरीर समझने से ही शंकायें आती हैं।
- नाम रूप की बात एक दम बन्द करो। देखो वह जिसमें देखना न पड़े, करो वह जिसमें करना "न पड़े। न करता न करावता" न खुद करो न किसी से करवाओ।
- होश आता है तो आता है सताना दिल का। जब ज़िज्ञासू होशियार हो जाते हैं तो गुरू को समझाने आते हैं कि तुम्हे ऐसा नहीं करना चाहिये। हमारे ऊपर क्रोध नहीं करना चाहिये।
- और सब याद है केवल आत्मा भूली पड़ी है।

द्वेत में बैठ कर बातें करते हो मैं और तू ये और वो।

इससे ऊपर तो मौन है।

- धूप होते हुए भी बदली देखने की अकल होनी चाहिये। ऐनक पहनो तो धूप से छाँव (बदली) हो जायेगी ज्ञान ऐनक पहनने से, प्रभु के सिमरन दुख न सन्तापे।
- ज्ञानी 500 रू0 देकर भी मन के opposite चलने वाला आदमी खड़ा करता है कि मन का पता चले तुम्हें बिना तनख्वाह के मन के opposite गुरु मिल गया है जो हमेशामन का दुश्मन होकर रहेगा कभी भी मन मुआफिक नहीं चलेगा।
- निराकार द्वेत से ऊपर है न ही कोई दुख न हीं खुशी उसम है इसलिये गुरु साकार-चीटी होकर चीनी खाता है। चीनी हो जाना नहीं चाहता है। यानि साकार की मौज लेने आया है, निराले नजारे देखने आया है।

!! पत्र दादा भगवान का!!

मैं आत्मा हू हर एक आत्मा है, आत्मा के सिवाय और कुछ नहीं है। शरीर सबके नाशवन्त हैं, क्योंकि नाम रूप नाश हैं। जगत मिथ्या और जगत के सब पदार्थ मिथ्यां नाशवन्त हैं Changeable हैं। मृग तृष्णां के जल के समान प्रतीत होते हैं, पर सब अमानत है। केवल ज्ञानी आत्मा, अमर है जो जीवन मुक्त है। ब्रह्मंज्ञानी आप परमेश्वर।

शरीर मर्रता है, पाँच तत्व तत्वों में मिल जाते हैं। आत्मां तो आकाशवत है मिली पड़ी है। ज्ञानी जीवन मुक्त विदेह-मुक्त है बाकी अज्ञानी 84 लाख योनियों में अन्त वेले की वासना और कर्मो के अनुसार जनम-मरण में आता है। ज्ञानी मुक्त है जो न ही इस समय कर्म करता है न ही वासना है। प्रारब्ध अनुसार सुख-दुख मरने तक उसका शरीर भोगता है। वह अपने को शरीर नहीं समझता है। क्यों अपने को शरीर समझकर दुख सहते हो ? इच्छामात्रम् अविद्या समझता है जब लिख्या लेख ललाट का मेट न सके राम!

सब इन्द्रियाँ जब अपने कर्मो में, विषयों में, मशगूल (व्यस्त) हैं जैसे आँखें देखती हैं, कान सुनते है ऐसे ज्ञानी परधर्म में नहीं जाता है। इसलिये वह कुछ करता नहीं है। सुख-दुख शरीर भोगता है, खुद मुक्त है। सर्व दुखों की निवृति, ब्रह्म आनन्द की प्राप्ति है। यही है मुक्ती।

सारी दुनिया सकल सृष्टि का राजा दुखिया पर ज्ञानी सदा ही Bliss(आनन्द) में है। वह साक्षी दृष्टा है, कर्ता बिल्कुल नहीं है। पर अज्ञानियों को देखने में आता है मानो कि दुखी भी होता है पर ज्ञानी आत्मा के निश्चय में है। प्रारब्ध से दुख-सुख शरीर भोगता है। अवश्य ही जो बना है वही बनता है।

ज्ञानी को सुइच्छा नहीं है पर इच्छा से सब होता है। परमात्मां का भाणां है क्योंकि वैराग्य से जगत मिथ्या ब्रह्मं सत्य समझा है। कोई भी पदार्थ स्थिर नहीं है सब अमानत बैठे सम्भाल रहे हैं। आया नंगा, जाये नंगा। सब पुत्र बच्चे पति पत्नि जाने वाले है। Return Ticket पर आये हुए हैं। कोई भी भरोसा नहीं है बैठे-बैठे चले जाते हैं और माया भी निकम्मी है आने जाने वाली ऐसे ''दिने दुख होया

अण दिने राजी रहिया।''

ब्रह्मांकार विरती जिसकी है वह सबको ब्रह्म देखता है। यह अद्वेत मत वाला फिर कुछ भी करेगा तो द्वेत लगेगा। इसलिये राजा जनक नमस्कार भी किसको करे? और ''घड़ी इक विसरूं राम तू तो ब्रह्मं हत्या मोहे होय।'' तन मन वाणी के तीनों ही कर्म त्याग दिये।

" सर्व कर्मान सन्यस्य, सर्व धर्मान परितज्य।''

कोटि कर्म बन्धन के मूल।

करन करावन आपे आप, मानुष के कुछ नाहीं हाथ।

इस प्रकार समता योग से Sameness and oneness में सब ब्रह्मं देखते हैं और जगत मिथ्या समझते हैं। अहमता, ममता, कर्ता, काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार कोई भी विकार नहीं रहते हैं। सब ब्रह्मं ही ब्रह्मं See nothing but God. पाँच मिनट में सब समझ सकते हैं। केवल तुम्हारे विश्वास की कमी है। अर्जुन जैसा विश्वास कृष्ण के लिये चाहिये।

''श्रद्धावान लभते ज्ञानम्।''

उत्तर प्रश्न करके सब संशय, भ्रम, शक शुबे दूर

करो। ज्ञान से तुम्हारा अज्ञान दूर हो जायेगा।

जैसे रोशनी करने से अंधेरे को रोक नहीं सकते हैं सूर्य उदय होने से अंधेरा भाग जाता है। तूफान आने सं मच्छर गायब हो जाते हैं। रस्सी देखने से सर्प का भ्रम चल जाता है।

चन्द्रमा देखने से व्रत तोड़ेंगे।

When knowledge dawns, world disappears, द्वेत पाप है। अद्वेत देखो तो द्वेत नाश होगा। ब्रह्मं समझने से जगत नाश हो जाता है।

सबका आधार आत्मा तू है। आत्मा के सिवाय दूसरी बात को दिल से हमेशा नाकार करो। सारी दुनियाँ अज्ञान में है, ज्ञानी करोड़ों में कोई एक है। अज्ञानी माया को भगवान समझते हैं, ज्ञानी रामराज्य में, इन्साफ पर विश्वास (भरोसा) रखते हैं। अज्ञानी माया में खुशी समझते हैं। ज्ञानी अपनी Aim शान्ति आनन्द Bliss समझते है।

माया में सारी दुनियाँ का राजा भी दुखी है और ज्ञान में Happiest man is without a shirt.

ज्ञान में शाहूकार चाहे गरीब happy रहता है। ज्ञानी

को संतोष है अज्ञानी माया के कारण असंतोष मे रहता है, बल्कि असंतोष खरीद करता है। असल में गरीब लोग सन्तोष में थे पर धनवान लोग असन्तोष को घसीट कर लाये हैं।

ज्ञान की खूबीं है कि जब तक दुनियाँ में रहता है हर हालत में आनन्द में है।

मर जाने के बाद थोड़ा सा भी धन साथ में नहीं चलता है। अज्ञानी धन की चिन्ता में लोभ में रहता है। कभी तृप्त नहीं रहता है। मर जाने पर सारा धन छोडकर मरता है।

प्रारब्ध है पदार्थो के लिये, वे पदार्थ Fix हैं। बाकी मनुष्य आया है कि ज्ञान लेकर तृप्त हो जाये। सारी उमर (जीवन) आनन्द में गुजारता है। ज्ञानी के घर सदा आनन्द।

अमेरिका के शाहूकार रोज अपने को पिस्तोल लगाकर आत्म हत्या कर रहे हैं। हलचल में हैं, धन की तकरारों में जेल भोगते हैं।

विलायत वाले प्रारब्ध पर ऐतबार नहीं रखते हैं। Reincamation (पुर्नजन्म) पर भी नहीं। इसलिये उनका हमारे साथ भेद है। यह साफ जाहिर है। तुम देखो सब

कितना भी चाहें, ज्ञानी नहीं हो सकते क्यों कि विश्वास की बात हर एक नहीं समझ सकता है। दुनियाँ के लोग तो इतना भूल-भूलैया के खेल में फंस गये हैं कि डूबे पड़े हैं हौ मैं का धीरग रोग ममता का दूसरा रोग, कर्ता का तीसरा रोग। रोगों में फसे हुए मुश्किल से छूटेंगे। पर हर एक मनुष्य अधिकारी है कि मुक्त हो कर मजा लूटे।

विवेक और विचार मनुष्य को जन्म का हक मिला हुआ है। कैसा भी पापी, अपराधी, दुखी हो तो भी पार हो सकता है कोई भी रूकावट नहीं है। हर एक अपना उद्धार करे। युगे-युगे अवतार आते हैं किसी न किसी को तार जाते हैं। कई मुक्त हुए हैं। सतगुरू की जरूरत है।

तेरे कातर मैं सब कुछ छोड़िया।

निष्काम की कद्र तुम्हें नहीं है। हाजिर सुख माया में हैं पर ज्ञान का आनन्द आखिर में मिलता है। थोड़ा वक्त देने से थोड़ा आनन्द मिलता है।

बहुत ही फायदे हुए हैं पर जीवन मुक्ति हाँसिल करके अर्जुन की तरह पार पहुचने की अकल किन्हीं थोड़ो को

आयी है। दूसरे आलस्य में जीवन बर्बाद कर रहे हैं।

ज्ञान बहुत सरल है पर फकीर, बाबा, ब्राह्मण, मौलवियों ने माया के मोह में फंस कर कठिन कर दिया है। सबको माया चाहिये। सच्चा कोई मुश्किल से मिलता है, जो करे खुशी से ख्वाब। मायाने सबको डंस लिया है।

गुरू जिसके अंधले, चेले अन्ध ब अनध।

काचे गुरू ते मुक्त न होय।

पूरे गुरू का सुन उपदेश,तो परब्रह्मं निकट कर देख।

सो प्रभू दूर नाहीं सो तू है।।

कृष्ण ने कहा उत्तर प्रश्न करने के सिवाय ज्ञान अन्दर में नही बैठेगा। शर्म ज्ञान में शोभा नहीं देती है।

द्वैत के सब काम छोड़ दो। कृष्ण का सन्देश ''वासुदेव सर्व: अपनाओ और एक दम प्रभु घट-घट वासी देखो। हकीकत को जाँचो, कितने फायदे पड़ते हैं। बीमारियाँ उतर जाती हैं, सुखी हो जाते हैं।

कस नहीं खाओ, एक दम आत्मा में लीन हो जाओं। तुम सीख कर, समझ कर फिर औरों को तारो।

हमेशा भगत और गुलाम होकर नहीं रहो। आजादगी का ज्ञान है। Man is a man when he is free.

कृष्ण ने गीता में स्त्री पुरूष का भेद निकाल दिया है सब मनुष्य हैं और असल में आत्मां परमात्मां हैं। वह पहचान लो।

न त्याग करना है न ग्रहण केवल समझना है, सच्ची समझ से सुखी होगे।

अज्ञान में फंस गये हो, शरीर समझना ही रूकावट है। क्यों शरीर कहलवा कर दुख सहते हो। तुम तो सतचित आनन्द स्वरूप हो। अपना आप असल पहचानो।

Anand Dham

Begam pur
Sharnagati

My Dearest Divine,

Your three letter today. Thanks. Do not expect others to love you, you yourself are ocean of love as I have told you. If people around you have less love, you must be happy, as one is happy when others around him have less power less love. You are all in all. God has become one with you. You are never away from him. You are in Him-with Him-at him, You are him alone. The sense of seperation is a dream. Never is any-thing seperate from other things. Forget your body and all seperations are gone. Forget your body and there you get God.

Christ - unless you are born again, You cannot see the kingdom of God. Now christ does not believe in reincarmation i.e birth after death again.

Then what does he mean by born again ? He means new birth, by hearing through the lips of Guru. All people born of mother are body concious, but they feel themselves Atma,
after hearing the satguru. Hereafter they get salvation ie Mukti. Hence they are free from death and rebirth, right here and now.

Majority consists of fools.

❖❖❖❖❖❖❖❖

यह सब जमाने में सच है, आज भी माया निकम्मी है यह कोई नहीं जानता। कितने ही माया के पीछे हैरान होते हैं पर प्रारब्ध से अधिक किसी को मिलता नहीं है।

माया आने से अन्धा जाने पर कमर तोड़ देती है। जितना समय है उतना समय जाने का डर रहता है सम्भालने की चिन्ता। माया के कारण ही तकरार हैं जेल भरे पड़े हैं मायावी लोगों से। पर मनुष्य का स्वभाव, जो पड़ी आदत पुरानी न बातों से बदलती है।

लोग मरते जा रहे हैं पर तुम नहीं समझते कि तुम्हें भी कभी मरना है। तो क्यों न अभी ही मुक्ती का ज्ञान ले लिया जाय, आलस्य क्यों? बहुत ही डूबे स्याने। सगल सृष्टि का राजा दुखिया गीता का सन्देश है उतिष्ठ utishta-awake सुजाग हो जाओं। sameness and oneess अद्वेत, समतायोग एकटक इलाज है। इलाज करो। पर इन्तजार नहीं। Equality देखों समभाव समत्व बुद्धि सम दृष्टि। Recollection है realization फिर समझो याद करो जो भुलाया है। भूलना कसूर है। नेकलेस गल में पड़ा है पर तुमने केवल भुलाया है। तुम पहले ही आत्मा हो,

आत्मा यह अब फिर realize करना है। मन नहीं मानेगा पर मान न मान तू है भगवान। स्वांस स्वांस सिमरन सिमरन क्या है? आप विसर्जन होय। अपना शरीर भुलाअं तो खुदी जाये और खुदा हाजिर हो। आतमघाती महापापी इस देह के अन्दर एक देव रहता है। क्षेत्र के अन्दर क्षेत्रज्ञ है, आत्मा है, जिसने बाद में शरीर धारण किया है निराकार बाद में साकार हुआ निर्गुण, सगुण हुआ।

"निर्गुण सगुण आप है, सुन्न समाधी आप
आपे किया नानका, आपे ही फिर जाप।"

Man is 2% Physical, 98% mental and spiritual. Physical claims most of our attention, time and energy. We have really forgotten God.

मिठा मू निघरखे तूं चरनन समाई,
कयम सेवा माया जी मालिक विसारे,

***Oh mother mine, make me thine
make my life divine.***

As Atma you are Birthless, Deathless and changeless for ever.

Self realisation is self-recollection self discovery, self recovery.

अब अवतार आते हैं तो मठ मन्दिर वालों देवल वालों मस्जिद वालों से तकरार opposition होती है जो पहले ही गद्दियों पर पक्के बने बैठे होते हैं उन्हे नीचे उतारने में अवतारों को मरना पड़ता है crucify होना पड़ता है। सब पाप की तरफदारी में हैं। अंधेरे में जो बैठे हैं उन्हे रोशनी पसन्द नहीं आती है।

❖ पहला फर्ज है Non possession होना। वह दान किसको करेगा ?

राजा हरिश्चन्द्र रोज लाखों दान करता था, अहंकार के कारण मसाणी बना। उसका पुत्र मरने पर दस आने लकड़ियों के लिये रानी को भीख मांगनी पड़ी।

We are here to make our lives 'Tell' i.e. teach real vidya, so that other lives may be better and happier, then they would have been

without us. We send forth our love, and our good influence, now they pray God every minute. Spiritual healing reaches in to every part of man's being if we have sufficient faith to allow the light of spirit to shine throngh us, into a sick mind or a loving heart, the mental and spiritual healing that results, will most assuredly heal the Physical also. Give courage hopes moral and spiritual upliftment.

भगवान की लीलायें यानि भागवत जैसे शास्त्र, जो आत्मा का ज्ञान ले चुके थे उन्हे पढ़ाते थे पर आजकल के आज्ञानी बेवकूफ जाकर खुद सीधा पढ़ कर मतलब निकाल कर अपने धर्म को लजाते हैं। समझ की कभी नहीं सकेंगे।

मनुष्य का शरीर तो प्रारब्ध अनुसानर चलता है पर अभी का पुरूषार्थ है तो दुख न सन्तापे काल परहरे, गर्भ न बसे। जैसे मोटर को Petrol कितने मील आगे पहुचाता है पर पीछे हटने के लिये driver को self effort करना

पड़ता है। ड्राइवर नशाई होगा तो accident कर देगा फिर दोष देगा बैलगाड़ी वाले को। Be careful, you won't fall. इस समय अचानक बारिश आकर पड़ी है, सुबह से लेकर बहुत ठण्डी हवा भी लग रही है।

❖❖❖❖❖❖❖

My Immortal Blessed self

We arrived here all safe and sound. The days are so very pleasant. here- we have got the Banglow here, which is even bigger than Your's in Mathura- Do please arrange to come as many of you as possible.

I am writing this letter with you in my mind. Its purpose is to help you enjoy a more satisfying life. By reading the suggestions.

You will have a greater sense of well being increased vitality. and keener interest in living. This is not easy, neither is that impossible.

Faith is stronger than fear.

Geeta's 2nd chapter explains 'Gyan yoga' that you are Brahmah and your hody is perishable, one day it will leave you according to yonr prarabudda, which is fixed as per drama.

you are already Brahmah, not that you will

become now, as an ass can not become a horse. If you were not already God, you could not become God now. This proves that you are God already. Which you forgot in company of worldly people and now Lord krishna reminds and awakens you. This is real guru, who does not teach by words or lecture, but it was his life, which inspired his pupils. He is man of insight, not of techincal skill, man of noble heart, not a claver man. If with Him you commit ten mistakes I am sure you commit thousand mistakes without him. All scriptures say, 'you are God yourself.' None can realize this by performing any karmas Dharmas Prayers or Bhagti which is duality.

'Jagat Mithya Brahmah sat' so when knowledge dawns the world disappears, and all the karmas, vanish, then you See nothing but God.God in all.

You, Me and he and all are God. you become sarvagia (सर्वज्ञ) This is advait Mata ie See nothing but God.

All is God. Sameness oneness of God. This is called Brahmakar virti.

Gyan yoga is also called samata yoga. At the death of the body such yogi attains Mukti .i.e. Nirvan pada, salvation and merges into Akash, as the siver in ocean, because he is desireless and egoless i.e. Nishkam. With samta yoya, Ahimat, Mamata, and karta venish and kama, krodha, Lobha, Moha and Ahankar also gone and hence you see nothig but God. Body conciousness is gone. That is only truth.

कृष्ण की गीता दो घंटे का corse है पर मैंने जो 33 वर्ष Tution दी है उसकी कद्र करो। वह भी बिना Doer के, उसका कितना न असर हुआ होगा, यहाँ तक कि तुम्हारी जबान में भी यश आ गया है जो कलर से केसर कर सकते हो। यह नहीं भुलाओ कि केवल निष्काम का फल है। दुनियाँ ने निष्काम की अटकल (रमज) नहीं समझी है।

It is nature's Las, that failure to porosress means retrogression.

यह फायदा है कि जो अपनी उन्नति नहीं कर रहा है वह पीछे हठ रहा है। गुरू रूठे तो मत छीनलेता है, और कोई हथियार नहीं लगाता है। जो वृक्ष बढ़ना छोड़ देता है यानि आज की धूप नहीं मिलती वह वृक्ष बीमार (रोगी) कहलायेगा, बढ़ेगा नहीं। पनपना छोड़ दे वह समझो नाश हुआ।

नहीं फायदा कोई जीने से,
जो रोते हुए को हसाना न आवे।

जब तक सूक्ष्म इच्छाए आती हैं तब तक मन है, जब कोई इच्छा उठे नहीं तो वह मुक्ति है। सर्व इच्छाओं का नाश और सर्व दुखों की निवृति तथा परम आनन्द की प्राप्ति है सच्ची मुक्ती।

क्या मागू कुछ थिर नाहीं।

Even prophets become perfect through sufferings.

बल्कि पैगम्बर भी दुखों में पक्के (मजबूत) हुए हैं।

The waves belong to the sea, but the sea is not of the waves. Allthough infact, there is no difference between Me and You. "Lord I belong to you and not you to me."

!! पत्र दादा भगवान का!!

गुरू बिन गति नहीं गुरू बिन घोर अंधारा सबके लिये guide चाहिये तो भगवान के लिये क्यों नहीं।

"मत कोई भरम भूले संसार, गुरू बिना कोई न उतरस पार।"

वह भी वक्त का गुरू चाहिये। जैसे अर्जुन के लिये कृष्ण, जनक के लिये अष्टावक्र। पर सच्चा गुरू वह है जो अपने को गुरू न समझे और हाथ जला मुख जला न हो। क़ामनी कंचन कीर्ती से दूर हो। दुनियां के गुरू तो गुरू यानि मांगने वाले हैं। इससे अच्छा तो गुरू न किया जाय।

जो गुरू पेट के गुजारे के लिये मन्दिर टिकाणें बनाते हैं उन्हे वैश्या के अड्डे कहते हैं। कोई भी Organisation अड्डे, संस्थायें पाठशालायें बनाना यह तो गृहस्थियों का काम है। कहा गया है।

देना भला काम है पर श्राप नहीं देना
लेने का काम सब खराब है, केवल दिल लेनी चाहिये।

Books and prayers are useles
Best prayer is healing of a brok
giveis to live

Bringing hope to hopeless, courage to those who are afraid, uplifting those, who have fallen,soothing down the beaslly. Possesoin of those who have lost all the sense of sanity andhumanily.Howmany
lost all the sense of sanity and humanily. How many Troubled hearts, has it quieted and strengthened. How many weary souls has it, led to him a brother of bereft and bereaved from vanquished to a victor. from penniless to an emperor.

नहीं फायदा कोई जीने से जो रोते हुए को हसाना न आवे। जिनके शरीर कमजोर और मुर्झाये हुए चेहरे थे, जिनके जीवन में ज्योत बुझ गयी थी, जिनमें जीने की चाह, उमंग ही नहीं था, मैं हूँ मेरी कोई हस्ती है यह भावना

ही उनसे विदा ले गयी थी, कोल्हू के बैल की तरह चक्की में पिस चुके थे, मेहनत और पसीना उन्हे निराश और मायूस कर चुका था, गुलामी की जंजीरों में
जकड़े हुए मनुष्य जात की मदद से ना उम्मीद और निराश, उन्हें मुर्दे से मर्द, कलर से केसर, नर से नारायण भोगी से योगी, मुश्किल से आसान करने वाला मेरा सतगुरू था। सच्चे सतगुरू को करूणा यानि दया का रोग लगा होता है I may die that yon may live. मानखा देही मिली है प्रभु पाने के लिए। Self realisation के लिये।
सतगुरू से ज्ञान लेना है कि मैं क्या हूँ और भगवान कहाँ है।

सतगुरू जबाब देते हैं कि-

खालिक खल्क, खल्क में खलिक, पूर रहियों सर्व ठाई, सो प्रभु दूर नाहीं सो तू है। You are That. तत् त्वम् अस्ति। अहम् ब्रह्मं अस्मई। को हम यानि who am I ? जवाब है। ओअम् सोहम् शिवोहम I am not this. I am not this body.

आप विसर्जन होय तो सिमरन कहिये सोय।

God is reality and universe is mithya (mirage)

God is Nirakar (invisible)

अपरा विद्या यानि शास्त्रों की विद्या यानि material knowledge यानि science जगत की बाते सिखाती है। पर परा विद्या ब्रह्मं विद्या है जो सिखाती है कि तू ब्रह्मं है। इस विद्या से मरने वाला इन्सान अमर हो जाता है। ब्रह्मं विद्या ही सच्ची विद्या है। दूसरी सब बिद्या अविद्या है Ignorance है। ब्रह्मं श्रोत्री ब्रह्म नेष्ठी सतगुरू से ब्रह्मं विद्या का उपदेश सुनो और बेअन्त का अन्त पाओ। मुक्ती अभी ही इस मनुष्य जन्म में ज्ञान से मिलनी है। गुरू मुख नाम झपै इक वार। ''पूरे गुरू का सुन उपदेश तो पार ब्रह्मं निकट कर पेख।'' बाकी कोटि कर्म बन्धन के मूल। कर्म धर्म पुस्तक पुराण से बार-बार नर्क स्वर्ग में लोग आते हैं।वैराग्य से ज्ञान होता है और फिर मुक्ती, बाकी आत्मा मन, बुद्धि, वाणी, चिन्तन, यतन, साधन, समाधी, ऋद्धियों सिद्धियों जप, तप, पुस्तक पुराण से परे है।

!! पत्र दादा भगवान का!!

दुख में धीरज सबसे सुन्दर। व्यर्थ की चिन्ता सोच नहीं करना चाहिये। आत्मांकार को भय या त्रास कभी नहीं होता है।

मुसीबत में मुस्कुराना सीखो। दिल नहीं उतारनी चाहिये। (दिल छोटी नहीं करनी चाहिये) चाहे दो घंण्टे बाद फांसी पर चढ़ना हो तो भी अपने दो घंटे खुशी से गुजारने चाहिये। क्या पता फांसी का हुकुम बदल भी सकता है। हम अपने ख्याल से ही मुसीबत बैठकर बनाते हैं। पक्का किसी को भी नहीं है कि जरूर मुसीबत आयेगी ही। न भी आनी हो, पर हम गिरे हुए विचार कर बैठते हैं, खुद ही कसूर वार हैं। गिरे हुए ख्याल भले ही आये पर चढ़े हुए ऊँचे ख्याल करना भी हमारे हाथ में है। क्यों न हमेशा अच्छे संकल्प करें। यह आदत बना लो। बुरे ख्याल चाहे अच्छे ख्याल करना हमारे हाथ में है, पर जब आत्मां में नहीं हैं तो मन आकर बुरे ख्याल देता है Don't think with your mind. Surrender unto God.

❖ प्रारब्ध से तो कोई नहीं भाग सकता है। जो होना है वह तो जरूर हो जायेगा। हम ख्याल करके कहते हैं कि कहीं ऐसा न हो, सो हमारी मर्जी से कुछ भी नहीं होता है। न ही अनहोनी कुछ होगी। हिम्मत रखो परमात्मा तुम्हारे साथ है। *The only thing we have to fear is fear itself.*

चिन्ता और भय निकाल कर अशोक रहो।

जुल्म का सामना करो पर इन्तजार, चिन्ता या डर बिल्कुल नहीं करो। सच पर सहिब राजी। भगवान मद्दगार है। सबकी तकलीफों मे समय आकर सहायता की है। यही खास पक्का करो। न अपनी चलओ न भगवान के किये पर नाराज हो। जो तिस भावे साई भली कार।

इच्छा काहे की? चिन्ता काहे की? कल के दुख की चिन्ता आज मत करो।आज का दिन हिम्मत से गुजारो निराश होना माना नास्तिक होना। दिल रखो दरियाह के दस्तूर। मन में खौफ (डर) धारण करेंगे तो बीमार हो जायेंगे बिना बात के। रहें तो हिम्मथ आनन्द से।-इतना तो काम में पढ़ने लिखने में खेलकूद में मशगूल (व्यस्त) रहें कि चिन्ता करने के लिये समय ही न मिले। खाली बैठने

वाले को मन आता है, निराशा आती है, बुरे ख्याल आते हैं। पहले ही खबरदार हो जाओ। क्या नाहीं घर तेरे। भगवान ने हमेशा सहायता की है यह हम हमेशा सुनते आये है।

अन्धकार में रोशनी देखो, गम और फिक्र के समय खुशी फैलाओ, भगवान के भजन गाओ। बेईमान नहीं बनो। मन जो भी कहे उसे नाकार करो। ऐसा नहीं होगा, यह ज़वाब मन को दिया करो। हजारों बार रोज मन ने हमें डराया होगा पर हुआ तो कुछ भी नहीं फिर आज क्यों डरें ? यह रोज पूछो।कल भी कुछ भी नहीं हुआ मन ने तो डराया था पर हुआ तो कुछ भी नहीं फिर आज क्यो डर रखूँ ? दूसरों के ऊपर कितनी न मुसीबतें आयीं हैं, मैं क्यूं थोड़े में दिलउतार कर बैठू ?

तूफान भी जितने समय के लिये आया होगा फिर तो शान्ति हो जायेगी, आखिर तो सब गुजर जायेगा। मैने कल का समाना किया, आज भी कर लूंगा, बाकी कल क्या ? कठिन समय आता है तो अकल भी उस समय आ जाती है। भगवान तो मेरे साथ हमेशा हैं।इससे पहले भी कितनी

मुश्किलें आयीं वे सब कैसे दफा हो गयी। काली घटायें कैसे छट गई। प्रारब्ध के अनुसार मेरे सुख अवश्य मुझे भोगने हैं। दिलगीर नहीं हो जाओ। अपने से पूछा करो भला अखिर भी क्या होगा, फिर भी क्या होगा ? अधिक से अधिक मौत, वह तो शरीर को मिलेगी मैं तो फिर भी अमर आत्मा हूँ।

खोफ और चिन्ता में वह रहे जिसका धणी साई (मालिक) न हो। सर्व शक्तिवान प्रभु तो मेरा हो चुका है, भगवान मेरे साथ है, अब मैं बेपरवाह हूँ।

सीता माता को रावण ले गया फिर रामचन्द्र ने कहा कि जाकर रास्ते में प्रसव (बच्चा पैदा) करो तो भी सीता ने चिन्ता नहीं की, तुम्हारे साथ क्या हुआ है ?
जो अवश्य होना है उसका सोच विचार क्या किया जाय ? होनी तो अवश्य ही होगी, अनहोनी कभी नहीं होनी है।

कभी भी किसी मनुष्य पर आधार नहीं रखना, एक परमात्मां पर आधार रखना। मानुख की टेक विरथा जान "कुंजू कुल्फ कड़ा कर हवाले होत जे।" चाबी ताला कुंड़ा सब भगवान के हवाले कर दो।

जो हिम्मत दिल से करता है वह भवसागर से तरता है।
डराती है दुश्मन की दुआ, अच्छी लगती हैं गालियां साजन की।
'' है ये ख्याल की ताकत अजब इसरार की मूरत।
है अख्तियार में तेरे बनाना दुख को सुख।
लगी मंसूर को फांसी, बनी सींगार की सूरत
तुम करो भला हम भलो न जानू।
साँप नहीं मरता, साँप का श्राप (डर) मारता है।
भुलाना दिल के दर्दों को, है बेहतर दवा तेरी।

संकलपमय सृष्टि है। संकलप किया तो चारपाई बिछ गई, स्त्री आ गई, फिर कहा कि शेर न आ जाये, तो आ भी गया। खराब संकलप नहीं करो।

तार अभी आयेगी तो अपने सब रिश्तेदार मार बैठोगे। संकलप की सिद्धि होती है। 'मेरा पति खराब नहीं है, मैं बीमार नहीं हूँ क्यों कि आत्मा हूँ।

कर्ण अपने को दासी पुत्र समझता था तो कमजोर हो जाता था और सूर्य पुत्र समझता था तो बहादुर हो जाता था।

लकड़ी को बिना काटे छोटा करना तुम्हारे हाथ में है।

मनुष्य को काल समझकर डर जाओगे तो मरोगे। बेचारा मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता है पर यदि तुम डरोगे तो वहीं का वहीं ख्याल में मर सकते हो। जैसे गुलाल के लोटे का पानी खून समझा तो वहीं का वहीं मर गया।

यह शरीर के प्रारब्ध के कर्मों के कारण चल रहा है। What protects the body ? Prarabdha Karma प्रारब्ध पूरा होने पर कृष्ण को तीर लगा।

एक सुन्दर जवान बहुत खुश है, शाहूकार है, केवल स्त्री बीमार है और एक केस झूठा कोर्ट में है पर Case को Face करने के लिये कमजोर होता जा रहा है बड़ा इज्जत का डर था जब तक केस चल कर पूरा हो तब तक बीस बरस पूरे हो गये है वह चालीस रतल चिन्ता करके बजन में घट गया। तीस वर्ष वाला अब पचास वर्ष का हो गया है, जवानी पूरी हो गई। स्त्री भी ठीक हो गई, केस भी कोर्ट से निकल गया पर इतना दुख 20 वर्ष देखा उसका किसे दोष दें ? भगवान ने तो केस भी जिताया, लिख कर भेजना सब कि यह दोष किसका ?

राजा तक सब इन्सान कमजोर हैं, निर्बल हैं, कुछ भी कर नहीं सकते हैं, केवल पुरूषार्थ से ज्ञान हांसिल करके अज्ञान निकाल सकते हो। इच्छा तो राजा की भी पूरी नहीं हो सकती है क्यों कि प्रारब्ध से ऊपर कोई भी इच्छा भगवान पूरी नहीं करता है। तेरा भाणां मीठा लागे।

You never try to avoid, what God sends.

Fear is the sign of want of faith Have faith in God. डरते हो तो कमजोर होते जाओगे। बीमारी के ख्याल करोगे तो ठीक हो जाओगे क्या ? अपने ख्याल सुधारो।

What is lotted can not be blotted.

what you can not cure, you must endure.

strensth is Life, weakness is death.

Difficulties and troubles will help you in diveloping your will and power of endurance. Be courageous. N B.

हालतों को बदलना हमारे हाथ में नहीं है पर ख्यालों को बदलना।

तुम कमजोर नहीं हो, कमजोरी के ख्याल भी नहीं करो। कमजोर को आत्मा भी प्राप्त नहीं होता है। कमजोरी मौत है। शरीर की प्रतीती रोगों का कारण है।

!! पत्र गीता भगवान का !!

यह ज्ञान वैराग्य के सिवाय नहीं लगेगा। इस ज्ञान की नींव है वैराग्य। जब तक तीनों लोकों के राज्य को भूक नहीं लगाई है तब तक ाान दिमाग में नहीं बैठेगा। एक भी इच्छा है तो मुक्ति से दूर हो। हर एक इन्द्रिय पर control करना जरूरी है।

व्यर्थ हंसना बोलना फालतू का एक शब्द भी बोलना मायावी बात करना पाप है।

पूरे दिन में आत्मा के सिवाय एक अक्षर भी न बोलो न सुनो न देखो। मौन में रहो। किसी के भी कर्मो में नहीं जाओ। अपने को ही सुधारने में व्यस्त रहो।

जितनी परहेज करोगे उतरा फायदा होगा। छुरवागी (कोई रोक- टोक नहीं) कोई आजादी नहीं है पर कन्ट्रोल सच्ची आजादी है। पाँच विषय और पाँच विकारों पर कन्ट्रोल हो। जो बाहर मजा समझता है वह कुत्ते की तरह है पर मजा है अपने में वह मिलेगा तब जब बाहर किसी भी शरीर में या पदार्थ में मजा नहीं समझेंगे। 24 घंटे ही जो अपने आत्म आनन्द में लीन रहता है वह बाहर की इन्द्रियों का सुख

जहर समान समझता है।

नाचने कूदने गाने या किसी भी बाहर की चंचलता से मन एकाग्र नहीं होगा।

पहले जब जिज्ञासू माया से आता है उसे आदत डालने के लिये गुरू भजनों के द्वारा या घुमा फिरा कर दुनियाँ भुलाता है परजब वो ज्ञान से मन लगाता है तो दिन पर दिन उसे वैराग्य पक्का करना है। सिनेमा ड्रामा बर्हिमुखता छोड़ कर अपने घर में रात को 8 बजे आकर पहुचना चाहिये और वहां बैठकर अपना अभ्यास पक्का करना है। जो सुना है वह विचार करना है। निष्काम होकर सुनाने में Busy रहना है।

आज तक जितना हम यहाँ परहेज में हैं उतना किसी भी शहर में हमारे जिज्ञासु परहेज में नहीं हैं। उन्हें मन मानी में ही आजादगी समझ में आई है।

गुरू अपने को मार कर एक कोने में बैठ कर तपस्या और ततीक्षा कर रहा है पर जिज्ञासु समझ रहे हैं कि हम क्या भी करें कैसे भी उठे बैठे, घूमें फिरें किसी समय भी घर में आये तो हमें कोई भी कहने वाला नहीं है। यदि गुरू

के कन्ट्रोल में कोई नहीं है तो गुरू का भक्त कहलाने लायक नहीं है।

तुम सब अपने से पूछो कि तुम अर्न्तमुख हो या बाहिरमुख ? हर एक अकेला अपने साथ बैठ कर देखो। अकेले अपने साथ बैठकर विचार किया है कि मैं क्या हूँ। अभी कितना समय लगेगा निश्चय करने में ?
गुरू कौन से आनन्द में है ? किसके आधार पर है और हम किस आधार पर हैं ? अपने में टिके हुए हो या नहीं ? अपनी मुरादी जांचो। अपनी स्थिति लिखो कि कहां पहुंचे हो। सबको ओम-

और सब सुख आनन्द,
तुम्हारा स्वरूप गीता ।।

!! पत्र गीता भगवान का!!

भगवान एक से अनेक होकर आया है खेल देखने। खेल बिल्कुल ठीक चल रहा है, उसमें इन्साफ पूरा हो रहा है। भगवान देखने में आयेगा साफ दिल वाले को। जिसके अन्दर में एक भी पाप है उसे भगवान नहीं दिखता है जैसे एक तिनका भी अगर उड़ कर आकर आंख में पड़े तो अलझन हो जायेगी आंख पूरा देख नहीं पायेगी। ऐसे ही एक भी खोटा ख्याल एक भी द्वेत का ख्याल दूसरे का ख्याल आयेगा तो मन में अशान्ति हो जायेगी। भगवान का दर्शन नहीं हो सकेगा।

अशान्ति बाहर से नहीं आती, न हीं कोई हमें दुख दे सकता है। दुख देने वाला केवल अपना मन दुश्मन है। अपना दुश्मन बाहर नहीं ढूढो पर दुश्मन अन्दर बैठा है। जिसने अपने मन को मारा उसने ही शान्ति आनन्द पाया। जिसने अपने को झुकाया उसने ऊँची पदवी पायी। चार लोग हमें झुके तो हम बड़े आदमी नहीं हो गये पर चार लोगो को हम झुक सकें तभी बड़े हुए। जो हाराता है नीचा होता है वही बड़ा है। जो अपनी भूल ढूँढ कर निकालता

है, भूल महसूस करता है वही अर्न्तमुख ज्ञानी है।

जो दूसरे की भूल बताता है, दूसरे की शिकायत करता है। वह नीचे है।

दूसरा है ही नहीं, है ही आत्मा।

किसी एक को भी बुरा समझा यानि भगवान की निन्दा की। हमारा किसी के भी विकारों से वास्ता नहीं है। हमारा केवल अपने आप से वास्ता है।

हम आये हैं अपने को सुधारने अपने को बनाने अपना उद्धार करने। हर एक करे अपना आप उद्धार। सजण भी है अपना आप, दुश्मन भी है अपना आप यदि है आत्मा से परे।

भगवान हम सभी के साथ है, सच्चे को कोई भी झटका नहीं है। हमें दिल साफ रखना है, किसी के लिये भी बुरा नहीं सोचना है न बुरा करना है। कुछ भी करेंगे तो भोगना पड़ेगा। एक भी कर्म हमारे खाते में नहीं आना चाहिये। प्रेम ही परमात्मा है। प्रेम का सबक पढ़ो। ज्ञान प्रेम में ही समाया हुआ है।

और सुख आनन्द
तुम्हारा गीता।

!! पत्र गीता भगवान का!!

पत्र आपके मिलते रहते है, मेरे भी मिले होंगे किस कदर मेरे पत्र पढ़ कर असर होता है? अपने को बदल रहे हो या नहीं, यदि मेरे पत्र पढ़ कर कोई भी असर नहीं होता तो मै पत्र लिखना बन्द करूं। यदि मेरे पत्रों से कोई फायदा होता हो तो लिख कर भेजो कि किस कदर अपने स्वभाव में बदलाव लाये हो' किस कदर दूसरों की शिकायतें और विकार अन्दर से निकाले हैं और भगवान करके सबको देखते हो या नहीं?

जब तक मन बातों में पड़ा है तब तक तुम आत्मा में नहीं हो। इसने ऐसा किया मैने ऐसा किया यह अज्ञान है न ये है न वो है न मैं हूं। '

'न हम न तुम, तो दफ्तर ही गुम''

भुलाना दिल के दर्दों के लिये, है बेहतर दवा तुम्हारी,।
एक दूसरे को माफी दो और भुलाओ। सब कुछ भुलाकर नये सिरे से प्रेम करना शुरू करो। अंदर में एक दूसरे के लिये इज्जत और प्रेम रखो। दूसरे से प्रेम मांगो नहीं पर देते आओ।

कुछ भी हुआ नहीं है, सब खेल, नाटक है। एक मिनट भी किसी से दुश्मनी की तो नर्क जैसा दुख वहीं का वहीं सहना पड़ेगा। Adjust हो जाओ। दो बच्चे आपस म कितना भी लड़ते हैं फिर वहीं का वहीं प्यार करते है। तुम्हारा हृदय बालक की तरह सरल और निर्दोष होना चाहिये। निष्पाप और निर्दोष जीवन गुजारो। एक भी पाप करोगे तो नींद खराब हो जायेगी।

एक तिनके की भी निन्दा नहीं करो। तिनका भी अगर उड़ कर आंख में पड़ गया तो बड़ा दुख देता है।

तेरा की ? दूसरा क्या भी करता है उसमें तुम्हारा क्या ? तुम आये अकेले जाओगे अकेले।

कर्म बनाओगे तो फिर उसका नतीजा भोगना पड़ेगा। कोई भी तकलीफ आयेगी तो पछताना पड़ेगा। प्रेम से, काम से एक दूसरे से बोलो पर फिजूल भले एक दूसरे से नहीं बोलो पर प्रेम नहीं छोड़ो।

एक दूसरे की गलत फहमियां उतारो। एक दूसरे से माँफी लेकर एक दूसरे को माँफी दो पर अहंकार नहीं

करो कि मैं क्यों बात करू मैं क्यों झुकूँ। जो झुका उसी को मिला राम है।

अपनी-अपनी भूलें महसूस करो सच्चे दिल से । सब भूले हुए हो क्योंकि दूसरा देख रहे हो। यह कुत्ते का स्वभाव है। सच्चा मनुष्य वह है जो आइने में अपना आप देखे।

मुस्कुराता हुआ चेहरा रखो। प्यार पहले से भी अधिक हो। मोह या स्वार्थ नहीं रखो। ठहर कर नहीं बैठो कि दूसरा प्यार करे या दूसरा बोले। जिसको अपना उद्धार करना हो वह एक दम सबसे प्यार करे।

ये मेरे पत्र व्यर्थ नहीं जाने चाहिये। यदि मैं देखूगी कि असर नहीं हो रहा तो सारी उमर पत्र नहीं लिखूंगी। तुम सब बदलाव लाकर पत्र लिखो कि मेरे पत्रों से तुमने क्या समझा और क्या किया ? एक-एक अपनी स्थिति लिखें।

तुम हमेशा खुश अपने ज्ञान में मस्त रहो बच्चे की तरह साक्षी दृष्टा होकर बैठो। अच्छे किताब पढ़ो। मैं तुमको याद करती हूँ। सबके लिये प्यार और सुख आनन्द

तुम्हारी गीता

!! पत्र गीता भगवान का !!

मन ऐसा बदमाश है जो है भी नहीं पर तुमने उसे ऐसी हस्ती दी है कि तुम्हारा मालिक बन कर बैठा है। देह में इतना अटक कर बैठा है कि ये शरीर छोड़ना ही नहीं चाहता है।

मन भागेगा तब जब तुम गुरू के होगे। गुरू को अपना मन बेचोगे तभी मन तुम्हारी जान छोड़ेगा।

मन खुद भी झूठा और मन का जगत भी झूठा एक भी ख्याल ही नहीं है तो मन आया कहाँ से ?

आत्मा रूपी सूर्य का दर्शन कराओ तो मन अंधेरा रहेगा ही नहीं।

ज्ञानी और अज्ञानी में यहीं फर्क है कि ज्ञानी मन इन्द्रियों का मालिक है और अज्ञानी मन का गुलाम है। तुम अपने से पूंछो कि तुम मन के राजा हो या नौकर ? यह डर करो कि काश तुम्हें डर न आये। डर बड़े में बड़ा विकार है। किससे डरते हैं जब है ही भगवान।

निर्भय होय भजो भगवान।

भूल हो जाये तो उसे भुला दो, फिर दूसरी भूल नहीं करो।

मनुष्य माना मन का ईश्वर। मनुष्य खुद भगवान है तो भूल क्यों करेगा आत्माकार किसी भी प्रकार की भूल

नहीं करेगा वह देखेगा ही आत्मा तो भूल किससे करेगा ?

मन तब मरेगा जब ईश्वर इंच्छा पर चलोगे न कि मन की इच्छा पर। तुम्हें शान्ति एकान्त और मौन पसन्द नहीं है तो समझो कि ज्ञान अन्दर घुसा ही नहीं है।

ज्ञानी दुनियाँ के संग से, व्यर्थ बोलने से दूर रहता है। घर में भी चुप (शान्त) और एकान्त में रहेगा। अन्दर ही अन्दर आनन्द पीता है और वैराग्य में रहता है कि ***"किस नाल कीजे दोस्ती सब जग चलणहार।"*** कब तक जीते रहेंगे, कब तक बनी रहेगी।

हर एक साजन है अपना आप, दुश्मन है अपना आप यदि है आत्मां से परे।

अपना उद्धार कर लो देर नहीं करो, कल न जाने किसकी है आज ही काम उतार कर बैठो निश्चय करके कि मैं मुक्त हूं, मैं मरने से ऊपर हूँ, सबके लिये प्यार है। किसी भी माया में आदत में अटका हुआ नहीं हूँ। रोज अपने को जांचो कि अर्न्तमुख विरती है या अभी बाहर मजा ढूंढ़ रहा हूँ। अपने जैसा मजा कहीं भी नहीं है, भले

सारी दुनियाँ देख कर आओ, सारी दुनियां के मजे लेकर आओ। पर थक कर आखिर हिरन की तरह अपने अन्दर में ही कस्तूरी देखोगे तो फिर शान्त हो जाओगे। सबको सुजाग करो, सबकी सेवा करो।

और सुख आनन्द
तुम्हारी गीता

!! पत्र गीता भगवान का!!

ज्ञानी अज्ञानी में यह फर्क है कि ज्ञानी ज्ञान में रहता है आत्मां में रहता है, अज्ञानी जगत में रहता है। हर वक्त उसे जगत की सम्बन्धियों की इच्छाऐं रहती हैं। ज्ञानी जगत की अन्दर में प्रलय कर देता है। न मैं हूं न मेरा जगत है। सब खेल है। सब अच्छा हो रहा है। हर हालत में राजी, सबके लिये नम्रता प्यार है, वह जहाँ तहाँ भगवान देखता है।

घर वालों से नम्रता प्यार रख कर अपना रस्ता और आजादगी लेता है। जैसे किसी से भी दुश्मनी न हो। एक भी इस राह पर खिलाफ होगा तो रास्ता रूक जायेगा। इस लिये हर एक से नम्रता से चलता है।

ज्ञान एक ही अक्षर में राजा जनक ने बताया कि नम्रता है। सर्व में पेखे भगवान, वासुदेव सर्वः। मैं ही तो हूँ। मेरे सिवाय आइने में दूसरा कोई भी नहीं है।

जगत है आइना, एक से भी प्यार कम ज्यादा होगा तो अन्दर में पूरी शान्ति नहीं आयेगी। जैसे एक तिनका आंख में उड़कर पड़े तो कितना दुख देगा ऐसे ही एक भी ख्याल खोटा आत्मां की शान्ति आनन्द नहीं देगा।

थोड़ा जहर या ज्यादा जहर मार ही देगा थोड़ा भी अज्ञान रहने मत दो। टोटल निरइच्छ बनो तो निरअभिमान हो जाओगे। भगवान भले ही इच्छाऐं पूरी भी करेगा तो भी शान्ति नहीं आयेगी। भगवान खुद खिसक जायेगा, तुम्हें दुनियां के सुख देकर। विषयों के रस गुलाम बनायेंगे कभी भी आत्म आनन्द लेने नहीं देंगे।

मन के गुलाम नहीं पर मन को अपना गुलाम बनाओ। एक भी इच्छा मन की पूरी करोगे तो दस इच्छाऐं बढ़ेगी। निरइच्छ वाले को कोई भी दुनियां में जीत नहीं सकेगा। सब इसके असर के नीचे आकर इसे भगवान समझते हैं।घर वाले भी पहले आजमायेंगे फिर वे भी शान्त हो जायेंगे। आजमा कर थक जायेंगे।

जैसे देवता मन्दिर में शान्त बैठा होता है तो सब आकर पूजते हैं हम भी ऐसे शान्त हो जायें, मौन में अन्दर बाहर आ जायें तो दुनियां वाले भी देवता समझेंगे। दर्शन से ही प्रसन्न हो जायेंगे।

मन की मौन भगवान बना देती है। मुख की शान्ति

देवता बनाती है। तुमने कौन सी मौन की है, अहवाल देना। हमारा सबको प्यार देना। सत्संग में सब प्रेमी आते होंगे, सब उन्नति कर रहे होंगे, जल्दी से जल्दी निश्चय कर लो, पल में प्रलय होयगी, फिर करेगा कब।

"हलु ततीअ तूं काहे, हित वेल विहण जी नाहे।"

सब आनन्द में होंगे।

तुम्हारी गीता।

!! पत्र गीता भगवान का!!

सभी के अन्दर में प्रेम और भक्ति छिपी हुई है पर समय पर जब भगवान आता है तो आकर सभी कि जंक लगी दिलों से प्रेम बाहर निकाल कर मुर्झाई हुई दिलों को आकर खुशी देकर, बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी में नई रोशनी आ जाती है। यहाँ देहली में बहुत सत्संगी हैं, सभी में खुशी की लहर छा गई है। सभी खुशी में नाच रहे, है झूम और गा रहे हैं। खुशी से ख्वाब करके बैठे हैं। मर्द भी बहुत बन गये हैं। यहाँ वालों ने अच्छी मेहनत की है सभी से ।

गुरू का कर्ज भी तभी उतरता है जब हम भी वैसी ही सेवा करें। आप जपै औरां नाम जपावे।
तुम भी सुस्ती छोड़ कर दूसरों को सुखी करो उस में अपना शरीर भूलेगा।

आप विसर्जन होय तो सिमरन कहिये सोय।

तुम जहाँ हो अपने आनन्द में रहो। सभी को आनन्द देते आओ, सभी के लिये प्यार रखो दिल व जान से कि

ये भी मेरा अपना आप ही है। हर एक जगह मेरा सज्रण (साजन) सांई है तो किसी के लिये भी घर में चाहे बाहर राग द्वेष नहीं रहेगा। प्रेम की दुनियां को बढ़ाओ। जहा भी हो वहां अपने को मारो। अपने को बनाओ, अपने में गुम रहो। दूसरे से एक अक्षर भी नहीं बोलो, मौन रखो। दूसरे का अवगुण देखने से तो डूब मरना ठीक है। हर एक खुद अपना उद्धार करने आया है। गुरू हमेशा ब्रहमं में टिकायेगा। तुम चाहे कितनी भी जीव भाव मे बातें करो।

जगत मिथ्या तो बात भी मिथ्या। जगत और मैं तू के बारे में बिल्कुल नहीं सोचो न बोलो। सब परीक्षा के लिये मिलें हैं कि देखे कि तुमने कितनी आत्मा पक्की की है।

भगवान हर वक्त सब रूपों में बैठा आजमा रहा है। काश हम जहाँ तहाँ पहचाने। सत्संग की मौज मची हुई होगी। सब को प्यार देना।

सुख आनन्द
तुम्हारी गीता।

Be not depressed, but pluck hope and strength out of the very hour of defeat and persecution and pain.

दुखी मत हो लेकिन दुख और पराजय की हर घड़ी से भी आशा और शक्ति का निर्माण करो।

Human sufferings end at the enterance of Divine Love and Consecration.

मनुष्य के दुख दर्द, भगवान के प्रेम व समपर्ण में गुम हो जाते हैं।

In the rough voyage of life light, houses are needed.

जिन्दगी के इस कठिन सफर में राह दिखाने वाले Light houses यानि सतगुरू की आवश्यकता होती है।

जो भगवान की प्रसंशा करता है, हर हालत का खुशी से स्वागत करता है, तो भगवान का प्रेम ऐसे भक्त को कभी छोड़ता नही।

उदासी को अपनी दासी बना दो, उसे कभी भी अपने चेहरे पर आने न दो।

एक परमात्मा के प्यारे बनो तो विश्व के प्यारे बन जाओगे।

!! पत्र गीता भगवान का!!

तुम्हारा प्रेम और विश्वास है तो पक्का फायदे ही फायदे हैं। दो लोगों को नई मोटर मिली। एक जल्दी-जल्दी मोटर चला कर जाकर तोड़ कर आया। दूसरे ने धीरे सम्माल कर मोटर चलायी तो उसकी मोटर बरसों तक चली। इसी प्रकार यह मनुष्य देही मोटर मिली है, अज्ञानी इसे जल्दी-जल्दी भोगा, विषय विकारो में ले जाकर खराब करता है, ज्ञानी इस मनुष्य देह को सम्माल कर चलाता है। ख्याल आत्मां का करता है, इस लिये उसका शरीर भी अच्छा रहता है, मन भी शान्त रहता है। इस मनुष्य देह से वह भगवान को पाता है। अज्ञानी लोभ के कारण जो मनुष्य देही पाई है वह भी गंवा देता है।

ज्ञानी को सारी दुनियाँ आजमायेगी, परीक्षा लेगी, ज्ञानी खुशी से परीक्षा देता है खुद परीक्षा लेने वाले को भगवान समझता है, कि किसी को भी कम ज्यादा नहीं समझता है। ***"सब में साईं बस रहा है, कम ज्यादा किसी को क्यों समझते हो।"*** सब में अपना आप देखता है। सर्व के लिये आत्म दृष्टि, प्रेम दृष्टि रहती है। घर में मौन

में रहता है। कोई भी अज्ञान की बात, फिजूल की बक-बक नहीं करता है।

एक शब्द बोल कर किसी को दुश्मन बना सकते हो, एक अक्षर बोल कर किसी को दोस्त भगवान बना सकते हो। तो ऐसा अक्षर बोलो कि अगले में भगवान का प्रेम पैदा हो।

व्यर्थ बोल कर फिर पछुताना पड़ेगा। हर एक खराब बात पर control करो। मोटर कैसी भी अच्छी हो पर यदि उसमें ब्रेक न हो तो काम की नहीं होगी। ऐसे ही वैरागय रूपी ब्रेक जरूरी है। मन पर कन्ट्रोल जरूरी है। मन माया की तरफ दौड़ता रहता है, उसे भगवान की तरफ मोड़ना चाहिये। मन को मारो नहीं पर मोड़ो जैसे बच्चा किसी बात पर जिद लगा कर बैठता है तो उसका मन दूसरी तरफ दौड़ाते है कि कौवा देखो, मोटर में घूमने चलते हैं वगहरा। इसी तरह मन माया की ओर जाये तो मोड़ कर ज्ञान की बातों में लगाओ, भजनों में लगाओ।

अज्ञान के कारण सब दुनियाँ में दुखी हैं। ज्ञान से घर

स्वर्ग हो जाता है क्योंकि मन में स्वर्ग और शान्ति है तो जहाँ-तहाँ मजा आ रहा है।

घर सुख वसिया, बाहर सुख पाया।

जो कुछ भगवान ने दिया है उसके लिये महरबानी मानो। जो भी दिया है वह उसी का ही समझो। किसी समय भी लेने आये तो खुशी से अमानत देना। तभी तुम ईमानदार हुए।

पाँच ही विकार तुम्हारे नौकर बन जायेंगे जब तुम उनके मालिक आत्मा में टिकोगे।

जीते जी ही मन अपर्ण करके तुम खाली और हल्के होकर बैठो, कि मौत से भी नहीं डरो।

मैं मरूंगा नहीं, अमर आत्मां हूँ, न मेरा दूसरा जन्म है क्यों कि कोई भी कर्म मेरे खाते में नहीं है।

शुभ अशुभ कर्म सब माफ हो गये जब मैने पश्चाताप करके फिर नहीं किये।

शरीर की सम्बन्धियों की बात और चिन्ता नहीं करो। सब भगवान पर रखो। अच्छा और इन्साफ हो रहा है।

दुख आये या सुख सब आखों पर रखों कि यह भी भगवान की सौगात है।

मॉंगों कुछ भी नहीं। क्या मॉंगू कुछ थिर नाहीं। सब भगवान आपेही कर रहा है, मैं कुछ भी कर नहीं सकता हूं यह निश्चय करो। अहंकार से हरवक्त बचो। जहाँ शरीर की मैं करो तो एक दम शर्म आनी चाहिये कि मैं हूँ कहाँ?

!! दौलत !!

जागो रे जागो रे, दौलत के दीवानो जागो रे।।

1. दौलत लड़का दे सकती है पर पुत्र दिलाना मुश्किल है।
दौलत नौकर दे सकती है, सेवक पाना मुश्किल है।।
दौलत औरत दे सकती है पर पत्नी नहीं दिला सकती।
पलंग सिरहाना दौलत दे पर नींद नहीं ला सकती है।।
2. दौलत से तो रोटी मिलती, भूख कहाँ से पाओगे।
ऐनक मिलती दौलत से पर नैन कहाँ से लाओगे।।
दौलत से बादाम मिलेंगे, ताकत ना मिल पायेगी।
सुख दिलायेगी यह दौलत, शान्ति नहीं दिलायेगी।।
3. चार टके में जाकर भैया, अभी जहर ले जाओगे।
बीस करोड़ रुपये में, अमृत की एक बूँद ना पाओगे।।
दौलत गीता दे सकती है, ज्ञान नहीं दे सकती है।
दौलत मंन्दिर दे सकती है, भगवान नहीं दे सकती है।।
4. धन से पाउडर सुर्खी ले लो, सुन्दरता ना पाओगे।
बाजे लें लो दौलत से, तुम कण्ठ कहाँ लाओगे।।
लाख सितारे चमके रवि बिन, दूर अंधेरा न होगा।
गुरु शरण बिन नाथ सुखों का, कभी सवेरा ना होगा।।

चिन्ताओं से कैसे छूटें और जीवन का मजा कैसे लूटे।

मेरा यह पक्का विश्वास है कि हमारी खुशी और शान्ति का आधार हमारी बाहरी हालतों पर नहीं है न ही दुनियवी पदार्थों और सुखों पर है। पर उनका आधार केवल हमारे मन के ख्यालों से है। बाहर की हालत का दिल की राहत से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। यदि हम मन में बहादुरी वाले तथा शान्ति देने वाले ख्याल करते रहेंगे तो फांसी के तख्ते की ओर जाते हुए या अपने कफन पर बैठते हुए भी अपनी जिन्दगी का आनन्द ले सकते हैं।

अपने आप ही अपने ही भीतर यह मन स्वर्ग से नर्क बनाता है और नर्क से स्वर्ग।

तुम्हें अपने सिवाय शान्ति कहीं से नहीं मिलेगी। सुख का चश्मा तुम्हारे अन्दर है केवल झुक कर घूँट पियो। दुनियाँ में 99% लोग जो बीमार हैं उनकी बीमारी का कारण कम या अधिक दिमागी खींचतान और ख्याली बोझ है। उसका परिणाम यह निकलता है कि ऐसे लोग जिन्दगी का मजा लूटने में नाकामयाब

होते हैं और जीवन से ऐब निकालते हैं और फिर उसके मसलों (Problems) को मुँह देने की शक्ति भी नहीं धारण कर सकते हैं। जब भी खुशी खो बैठें तब उस खुशी को हांसिल करने के लिये सही राह यह है कि अपने को खुश मिजाज समझो। इस प्रकार बोलो और काम करो मानो कि खुशी तुम्हारे पास पहले ही मौजूद है।

❖ अपने मुँह पर मुस्कुराहट रखो, सीना तान कर चलो, साँस लो, गीत की थोड़ी पंक्तियाँ गाते रहो।

❖ जिसे हम बुराई या कमी समझते है उसमें से चौथाई हिस्सा अक्सर पसन्दीदा और शक्ति दायक है जिसे हम भलाई में बदल सकते हैं। अन्दर की ममता डर और कमजोरी को बदल कर हिम्मत और लड़ाई की तैयारी की ओर खीचें।

❖ केवल आज का दिन है, आज का दिन ही खुश गुजारो। ख्यालों को छोड़ कर काम में खुश रहो तो तुम अपने को बेहतर महसूस करोगे। अपने विरोधियों से प्रेम रखो। वैर भाव खुद की सेहत को बिगाड़ देता है।

- जिनके भीतर, मन में नफरत की आग जल रही है उन्हें अक्सर बढ़ा हुआ रक्त चाप (High blood Pressure) सताता है यदि लगातार यह स्वभाव चलता है तो दिल की बीमारी हो जाती है।
- अन्दर में वैर भाव व नफरत रखने से खाना भी जहर हो जाता है। यदि हम किसी से प्रेम न कर सके तो कम से कम अपने से तो प्रेम करें।
- इतना तो अपने से प्रेम करें कि हमारे दुश्मन को हमारी सुन्दरता सेहत और आनन्द को नाश करने का मौका ही न मिले।
- अपने विरोधियों के लिये अग्नि कुण्ड इतना न तपाओ कि खुद तुम ही उसमें झुलस कर जल कर खाक हो जाओ।
- क्राइस्ट ने कहा 100 बार माँफी दो। हमारा स्वभाव भले ही इतना उत्तम न हो कि हम अपने विरोधियों को प्यार करें पर अपनी तन्दुरुस्ती और खुशी के लिहाज से ही हमें चाहिये कि हम उन्हें माँफी दें और उन्हें भूल जायें।

- हर रात सोते समय सबको रोज माँफ करो और उनकी भूले पट्टी से मिटा दो।
- लकड़ियाँ और पत्थर मेरी हड्डियों को तोड़ सकते है पर शब्द मुझे बिल्कुल भी चोट नहीं पहुँचा सकते।
- मैं अपने काम में इतना तो व्यस्त हूँ कि किसी को धिक्कारने के लिये वक्त ही नहीं है।
- मुझे लड़ाई झगड़ा करने के लिये बिल्कुल वक्त नहीं न ही चिन्ता करने की फुर्सत है।
- कोई भी व्यक्ति मुझे मजबूर करके ऐसा नीच नहीं बना सकता कि मैं बैठ कर उसे धिक्कारूं।
- आनन्द और शान्ति की प्राप्ति के लिये एक ही तरीका है कि जो बात हमारे बस के बाहर है उसे भुला दें। जो होना है उसे भले होने दो। अटल को टाल नहीं सकते।
- जब इतनी शक्ति उत्पन्न होगी जो जीवन को हरा-भरा बनाने में हमारी मदद करेगी।
- तुम्हें या तो जीवन के न टलने वाले तूफानों के आगे झुकना पड़ेगा या तो उनका मुकाबला करके अपने को

गिरा कर, मिटा कर बीमार होना पड़ेगा।

❖ बेल की तरह नीवां होना सीखो, दरख्त (वृक्ष) की तरह सीधे, सामने होने की आदत नहीं बनाओ।

❖ जो अवश्य होना है उसके लिये चिन्ता काहे की? भुला दो। काश मैं हमेशा करूँ अटल को स्वीकार। (जो टल न सके) दुनियाँ के लोग थोड़ी खुशी के लिये गम के रूप में बहुत कुछ दे रहे हैं।

❖ तकदीर की अंगुली जब कुछ लिखती है, उसे दरवेश, स्याने भी नहीं रोक सकते, उसका एक भी शब्द बदलना है मुश्किल, तुम्हारे आँसुओ से भी नहीं बदल सकता है।

❖ कैसे भी यतन साधन करें पर भूतकाल (Past) हाथ नहीं आयेगा इसलिये गुजरी (Past) को भुलाओ।

❖ जो कुछ दूसरे समझते हैं कि तुम हो, वह तुम नहीं हो पर जो तुम ख्याल करते हो तुम हो।

As you think so you become-

❖ हमें अपने विरोधियों से कभी भी वैर भाव नहीं रखना चाहिये, क्योंकि यदि वैर भाव रखेंगे तो अपने को ही कष्ट पहुचायेंगे।

❖ दुनियाँ से कभी भी अहसान मन्दी की इच्छा नहीं रखो। क्राइस्ट ने दस जनों को कोढ़ से बचाया पर उसमें से केवल एक ने उसकी महरवानी मानी बाकी नौ जने शुकराने मानने के सिवाय ही गायब हो गये। किसी से भी शुकरगुजारी की उम्मींद रखेंगे तो दिल का दर्द हाँसिल होगा।

❖ हम अपनी खुशी की खातिर दूसरों की भलाई करें। अहसान मन्दी की उम्मींद किसी से भी न करें।

❖ यदि तुम्हारे पास पीने के लिये ताजा पानी है और खाने के लिये जो चाहो उतना आज मौजूद है तो तुम्हें कोई भी चिन्ता बिल्कुल नहीं करनी है।

❖ दो बातें जरूरी है। (1) शान्ति (2) हंसी-खुशी

❖ जो हमें मिला है उसका ध्यान भी नहीं हैं। जो नहीं मिला

है उसमें हमेशा ध्यान है इसीलिये दुखी है। ईश्वर की अपार नियमतों के लिये शुकराने कहाँ मानते हैं।

- हर एक हालत को अच्छा देखने की आदत हजार डालरों से भी अधिक मूल्य वाली है।
- जिन्दगी में मनुष्य को दो मुरादें हाँसिल करनी चाहिये-
  (1) पहली जो चाहते हो वह हाँसिल करो।
  (2) दूसरा उसके बाद उसका आनन्द लूटों
- सच्चे दिल वाला इन्सान ही दोनों मुरादें हासिल करने में कामयाब होता है।
- अपनी नियामतें गिनों, मुसीबतें याद मत करो।
- अपने को पहचानो, जो हो वह बन कर रहो। तुमसे बढ़कर दूसरा कोई भी नहीं है।
- Past को याद करना है लकड़ी का बुरादा चीरने के समान जो पहले ही चिरा हुआ है उसे क्या चीरोगे ?
- गिरा हुआ दूध कभी भी वापस नहीं मिलेगा।
- तुम्हारे विरोधी तुम्हारा फायदा करते हैं, तुम्हारी परीक्षा लेकर तुम्हें पक्का करते हैं।

- दुख आड़े आये तो उसे सुख का साधन बना दो।
- मनुष्य में वह हैरत अंगेज (आश्चर्यजनक) शक्ति है कि वह ऋण (-) को धन (+) बना सकता है, दुख को सुख के रूप में बदल सकता है।
- दो लोगों ने जेल की सलाखों से बाहर निहारा, (देखा) एक ने देखे तारे, दूसरे ने देखी कीचड़।
- बेहतर चीज पाने में ही अधिक से अधिक कठिनाई होती है। कठिनाई का विचार न करके पुरूषार्थ में लग जाओ तो बेहतर चीज अवश्य प्राप्त होगी।
- आनन्द कोई ऐश में नहीं है पर अन्दर की जीत में है, वह जीत ही दुख को बदल कर सुख बना देती है।
- सच्चा विद्वान वह है जो न सिर्फ मुसीबत का मजबूर होकर सामना करे पर उससे मुहब्बत करे।
- हमारी कमजोरियाँ ही अन्त में हमारी सहायक बनती हैं।

Failures are the pillars of the success.

- खुशी और आनन्द उसी के पल्ले पड़े हैं जिन्होने दुखों और

मुसीबतों को खुशी से स्वीकार किया है।

❖ दुख को सुख का हेतु बनाने में ही अकल चाहिए

❖ मनुष्य शिकायत करना छोड़ दे तो गमगीन न रहे अपनी हालत पर। न फिर ऐसा कहेगा कि लोग मुझ पर तरस खायें मेरी सेवा करें, मेरा दुख महसूस करके मेरी मदद करें, मगर खुद दूसरों के दुख दूर करके दूसरों की भलाई का ख्याल रखेगा।

❖ वे खुदगर्ज (selfish) हैं जो रोगों और शिकायतों की गठरी उठाकर हमेशा कुढ़ते हैं, चिढ़ते रहते हैं कि दुनियां हमारी मदद नहीं करती। लोग या रिश्तेदार हमारी खुशी का ख्याल नहीं रखते हैं। रोज यह विचार रखें कि मैं दूसरों को कैसे खुश रखूँ। जो मनुष्य दूसरों के दुख दर्द दूर करने में दिलचस्मी नहीं रखता वही जीवन में बड़ी कठिनाइयों और मुसीबतों से गुजारता है। उसका मन कभी भी खुश नहीं रहेगा।

❖ दूसरों को हंसाने के कारण मनुष्य पर अजीब असर होता है क्योंकि दूसरे से भलाई करते समय अपना

आप याद नहीं रहता और अपने को याद करने में ही चिन्ता, दुख, डर होता है। अपने को भुलाने का तरीका है दूसरों को हंसाना।

❖ दूसरों क़े दुखों में इतना ध्यान दो कि अपना शरीर और अपने दुख भूल जायें।

❖ मनुष्य के जीवन में कोई भी आला मकसद नहीं है वह जिन्दगी के दिन मजबूरन यूंही काट रहे हैं। उनका जीवन उस इन्सान की तरह है जो जहाज के छूट जाने पर किनारे में खड़ा होकर रोता चिल्लाता है और अपनी भूल के लिये दूसरों को दोष देता है।

❖ दूसरों से भलाई करना, हंसना और उनके दुखों का साथी बनना कोई फर्ज नहीं है पर यह हमारे दिल की एक खुशी है और इससे सेहत में सुधार आता है। जब तुम दूसरों की भलाई में हो तभी तुम सचमुच अपने से भलाई कर रहे हो।

❖ जो हाथ गुलाब का फूल देता है उस हाथ में खुशबू जरूर रहेगी। पूरे दिन में भले किसी की भलाई नहीं करो पर केवल जो तुमसे मिले उनसे हंसो, उनकी लाइफ

(जीवन) पूछो, उनमें दिलचस्मी लो।

❖ जो अपने लिये जीता है वह व्यर्थ जीता है।

❖ जो अपना जीवन मेरे खातिर खर्च करता है वह ही हकीकत में जीवन पाता है। यह एक गूढ़ (गहरा) सत्य है।

❖ जो अपने को खुश रखना चाहता है उसे चाहिये कि वह पहले दूसरों के खुश रखें। मतलब कि खुशी एक फैलने वाली (संक्रामक) चीज है।

❖ जो अपने को दूसरों की सेवा में व्यस्त रखता है वही जीवन में सुख लूटेगा।

❖ मनुष्य यदि चाहता है कि अपनी जीवन में खुशी हांसिल करुँ तो उसे दूसरो के लियें जीना चाहिये। क्यों कि हमारी खुशी दूसरो की खुशी पर आधारित है।

❖ जो भलाई मैं अभी कर सकता हूँ वह अभी करूँ, यदि अभी मौका गवाऊँगा तो फिर ऐसा सुनहरा मौका नहीं मिलेगा अपने को खुश करने का।

❖ दूसरों में चाह (दिलचस्पी) रखो, अपने गम भुलाओ।

रोज दूसरों के चेहरे पर खुशी लाओ।

❖ चिन्ता के लिये बेहतरीन तरीका है ईश्वर में अटल विश्वास। अपने में विश्वास।

❖ जिसे विश्वास है कि मेरी बागड़ोर ईश्वर के हाथ में है, उसे मेरी सलाह की जरूरत नहीं है।

❖ क्राईस्ट ने कहा मैं इसलिये आया हूँ कि तुममें जान आये और जीवन का पूरा आनन्द लूटो।

❖ एक आदमी स्वैटर पहनकर किसी दुकान पर चढ़ा, वहां स्वैटर टंगे हुए थे, दुकानदान को बोला कि मुझे एक स्वैटर दो। दुकानदार ने कहा कि स्वैटर तो तुमने पहन रखा है फिर दूसरे किसी के लिये चाहिये क्या? तो वह आदमी दुकान से उतर गया। उसने कहा कि मैं भूल गया था कि मैंने स्वैटर पहना हुआ है। इसी प्रकार तुम किसी सन्त के पास जाओगे कि मुझे शान्ति चाहिये तो वह कहेगा कि शान्ति स्वरूप तुम खुद हो तो फिर तुम शान्त हो जाओगे कि वह तो मैं हूँ। मैने अपने को भुला दिया है, व्यर्थ ही भटक रहा हूँ।